अनुष्टुप् छन्द के द्वारा सुस्थित ग्रहों से मनुष्यों की सुस्थिरता—

प्रकृत्यापि लघुर्यश्च वृत्तबाह्ये व्यवस्थितः ।
स याति गुरुतां लोके यदा स्युः सुस्थिता ग्रहाः ॥ ५८ ॥

जिस तरह स्वभाव से लघु अक्षर भी वृत्तबाह्य (पादान्त) में व्यवस्थित होने से गुरु हो जाता है उसी तरह जो पुरुष स्वभाव से लघु (दूषित कुल में उत्पन्न) और वृत्तबाह्य (बाह्येन्द्रिय) में व्यवस्थित है अर्थात् दुःशील है, वह भी अनुकूल ग्रह आने पर लोगों में पूजित होता है । यह अनुष्टुप् छन्द है ।

इसका यही उदाहरण है ॥ ५८ ॥

वैतालीय छन्द के द्वारा असुस्थित ग्रहों के आने पर प्रारम्भ किया हुआ कर्मकर्ता का घातक—

प्रारब्धमसुस्थितैर्ग्रहैर्यत् कर्मात्मविवृद्धये बुधैः ।
विनिहन्ति तदेव कर्म तान् वैतालीयमिवायथाकृतम् ॥ ५९ ॥

जिस तरह अविधान से वैताल सिद्धि के लिये किया हुआ कर्म साधकों का ही नाश करता है उसी तरह पण्डित लोग असुस्थित ग्रहों के आने पर आत्मवृद्धि के लिये जिस कर्म का प्रारम्भ करते हैं वह कर्म ही उनका नाश करता है । यह वैतालीय छन्द है ॥५९॥

औपच्छन्दसिक छन्द के द्वारा सुस्थित ग्रह आने पर स्वल्प प्रयत्न से कार्य की सिद्धि—

सौस्थित्यमवेक्ष्य यो ग्रहेभ्यः काले प्रक्रमणं करोति राजा ।
अणुनापि स पौरुषेण वृत्तस्यौपच्छन्दसिकस्य याति पारम् ॥ ६० ॥

सुस्थित ग्रहों को देखकर जो राजा शत्रु के ऊपर आक्रमण करता है वह अल्प सैन्य में युत होने पर भी औपच्छन्दसिक वृत्त (वेदोक्त क्रिया) का पार जाता है । यह औपच्छन्दसिक छन्द है ।

औपच्छन्दसिक छन्द का लक्षण—

पर्यन्ते शेषमूर्ध्वसाम्यादौपच्छन्दसिकं वदन्ति सन्तः ॥ ६० ॥

दण्डक छन्द के प्रथम पाद द्वारा रविवार में विहित कर्म—

उपचयभवनोपयातस्य भानोर्दिने कारयेद्धेमताम्राश्वकाष्ठास्थिच-
र्मौर्णिकाद्रिद्रुमत्वक्खव्यालचौरायुधीयाटवीक्रूरराजोपसेवाभिषेकौषधक्षौ-
मपण्यादिगोपालकान्तारवैद्याश्मकूटावदाताभिविख्यातशूराहवश्लाघ्यया-
ग्न्यग्निकर्माणि सिध्यन्ति लग्नस्थिते वा रवौ ।

जन्म राशि से उपचय (३, ६, १०, ११) भवन या लग्न में स्थित सूर्य हो और सूर्य वार हो तो सोना, ताँबा, घोड़ा, लकड़ी, हड्डी, चमड़ा, ऊनी वस्त्र, पर्वत, वृक्ष, त्वचा, शुक्ति, सर्प, चोर, खड्ग-सम्बन्धी, वन, क्रूर, राजा का आराधन, राजा आदि का अभिषेक, औषध, क्षौम, क्रय-विक्रय आदि, वन में उत्पन्न हुए द्रव्यों के ग्रहण पोषण आदि, गोपाल, मरुभूमि, वैद्य, पत्थर, कूट, सत्कुलोत्पन्न, कीर्तियुक्त, शूर, युद्ध में कमनीय, गमनशील, अग्निकर्म इन सब वस्तुओं के सम्बन्धी कर्मों की सिद्धि होती है । यहाँ पर समास संहिता में—

समाससंहिता में—

नृपाग्निपट्टकर्माणि युद्धकार्याणि यानि च । सूर्यस्य दिवसे प्रशस्तानि सर्वाणि कारयेत् ॥

यहाँ पर यवनेश्वर—

नृपप्रतिष्ठायुधयुद्धयोधहेमाग्निगोमूत्रभिषक्प्रयोगान् ।
रवेर्दिने वन्यमृगार्दनादि प्रशस्यते द्विक्रमयकृच्च कर्म ॥

यहाँ पर गर्ग—

क्रौर्यं शाठ्यं नृपाज्ञेद शत्रूणां चैव बन्धनम् । अभ्यानं च विवाहं च निधिकार्यं च कारयेत् ॥
तनुशुद्धिशिराकर्म वडवाश्वविमोचनम् । सर्वमेतद्यथोद्दिष्टं कारयेद्रविवासरे ॥ १०३ ॥

दण्डक छन्द के द्वितीय पाद द्वारा चन्द्रवार में विहित कर्म—

शिशिरकिरणवासरे तस्य वाप्युद्गमे केन्द्रसंस्थेऽथवा भूषणं शङ्ख-
मुक्ताब्जरूप्याम्बुयज्ञेक्षुभोज्याङ्गनाक्षीरसुस्निग्धवृक्षक्षुपानूपधान्यद्रवद्रव्य-
विप्राश्वगीतक्रियाशृङ्गिकृष्यादिसेनाधिपाक्रन्दभूपालसौभाग्यनक्तञ्चरश्ले-
ष्मिकद्रव्यमातुल्यपुष्पाम्बरारम्भसिद्धिर्भवेत् ॥

चन्द्रवार में अथवा कर्क लग्न या केन्द्र स्थित चन्द्र हो तो भूषण, शङ्ख, मोती, कमल, चाँदी, जल, यज्ञ, इक्षु (ईख = गन्ना), भोज्य, स्त्री, दूध, सुस्निग्ध वृक्ष (अखरोट आदि) क्षुप, जलप्राय देश, धान्य, अवलेह, ब्राह्मण, साम गानकर्म, शृङ्गी (हरिण आदि), कृषि आदि, सेनाधिप, पार्ष्णिग्राह (पार्श्व रक्षक), राजा, अतिप्रियता, रात्रिचर, कफ करने वाले द्रव्य, मामा का हित, फूल, वस्त्र इन सब वस्तुओं के सम्बन्धी कर्मों की सिद्धि होती है । यहाँ पर समास संहिता में—

जलस्त्रीराजकर्माणि मृदून्यन्यानि यानि च । तानि चन्द्रादिने कुर्यात् शुक्लपक्षे विशेषतः ॥

यहाँ पर यवनेश्वर—

स्त्रीसङ्गमालङ्करणाम्बरस्त्रग्निक्रियाहर्षसुखाश्रयांश्च ।
कुर्वीत चन्द्रस्य दिने प्रधानयज्ञोत्सवान् रत्नरसार्जनं च ॥

यहाँ पर गर्ग—

उपभोग तथा शय्यां नवमिश्र गृहं चरेत् । पचेद् घृतं च तैलं च सम्बन्धं चात्र कारयेत् ॥
क्षुरकर्म तथा दाम गवां वेश्मप्रवेशनम् । नृपसन्दर्शनं विन्द्यात् कुर्याच्चैव निवेशनम् ॥
सर्वमेतद्यथोद्दिष्टं कुर्याच्चन्द्रदिने शुभे ॥ १०३ ॥

दण्डक छन्द के तृतीय पाद द्वारा मङ्गल वार में विहित कर्म—

क्षितितनयदिने प्रसिद्ध्यन्ति धात्वाकरादीनि सर्वाणि कार्याणि
चामीकराग्निप्रवालायुधक्रौर्यचौर्याभिघाताटवीदुर्गसेनाधिकारास्तथारक्त-
पुष्पद्रुमा रक्तमन्यच्च तिक्तं कटुद्रव्यकूटाहिपाशार्जितस्वाः कुमारा-
भिषक्शाक्यभिक्षुक्षपावृत्तिकोशेशशाठ्यानि सिद्ध्यन्ति दम्भास्तथा ॥

मङ्गल वार में धातुओं के आकर आदि सम्बन्धी सब कार्य, सोना, अग्नि, प्रवाल, शस्त्र, क्रूरता, चोरी, दूसरे को उपद्रव, वन, दुर्ग, सेनाधिप, रक्त पुष्प वाले वृक्ष, रक्त वस्तु, तिक्त (निम्ब आदि), कटुद्रव्य (मरीचादि), कूट, सर्प के बन्धन से उपार्जित धन वाले, कुमार, वैद्य, शाक्यभिक्षु (सन्यासी), रात्रि में कार्य करने वाले, खजानची, शठता, दम्भ इन सब वस्तुओं के सम्बन्धी कर्मों की सिद्धि होती है ।

यहाँ पर समाससंहिता में—

दुर्गग्रहणकर्माणि हेमकर्माणि यानि च । तथा च पशुकर्माणि कुर्याद्भौमदिने नरः ॥

यहाँ पर यवनेश्वर—

अश्वावरोधाहृतहिम्रभेदाः स्तेयाहिशस्त्राविविषप्रयोगाः ।
दिने कुजस्य ध्वजिनीनिवेशाः कार्याः सुवर्णाश्मपशुक्रियाश्च ॥

यहाँ पर गर्ग—

आयुधं कारयेत् प्राज्ञः पापकर्म तथैव च । बन्धनाशानि कर्माणि लुण्टनं तु यथार्थिकम् ॥
षण्मुखस्याग्र कर्तव्या पूजा च शिखिकुक्कुटैः । पूजयेदनलं चात्र यन्त्रकार्यं समारभेत् ॥
मन्त्रकर्म विवाहं च दिने भौमस्य वर्जयेत् ॥ ६०३ ॥

दण्डक छन्द के चतुर्थ पाद द्वारा बुधवार में विहित कर्म—

हरितमणिमहीसुगन्धीनि वस्त्राणि साधारणं नाटकं शास्त्रविज्ञान-
काव्यानि सर्वाः कलायुक्तयो मन्त्रधातुक्रियावादनैपुण्यपुण्यव्रतायोग-
दूतास्तथाऽऽयुष्यमायानृतस्नानह्रस्वाणि दीर्घाणि मध्यानि च च्छन्दत-
श्चण्डवृष्टिप्रयातानुकारीणि कार्याणि सिद्ध्यन्ति सौम्यस्य लग्नेऽह्नि वा ॥

बुध के लग्न या दिन में हरित मणि, पृथ्वी, सुगन्ध द्रव्य, वस्त्र, साधारण कार्य, नाटक, शास्त्र, विज्ञान, काव्य, सब कला, द्रव्यों का संयोग, मन्त्रक्रिया, धातुक्रिया, किसी के साथ विवाद, निपुणता, पुण्य, व्रत ग्रहण, दूत, आयु के लिये हित कार्य, माया, मिथ्या, स्नान (पुण्य स्नान आदि), शीघ्र होने वाला कार्य, देर में होने वाला कार्य, मध्य समय में होने वाला कार्य, यथेच्छ ग्रहण पूर्वक प्रचण्ड वृष्टि में पदन्यास के अनुकरण करने वाला कार्य अर्थात् कोई ह्रस्व, कोई दीर्घ और कोई मध्यम कार्य इन सब वस्तुओं के सम्बन्धी कर्म की सिद्धि होती है । यहाँ पर समाससंहिता में—

स्वाध्यायशिल्पव्यायामकलाकर्मरतानि च । तानि सौम्यदिने कुर्यादपि पापैर्न सङ्गतः ॥

यहाँ पर यवनेश्वर—

स्वाध्यायसेवालिपिलेख्यशिल्पव्यायामनैपुण्यकलाविशेषाः ।
वृद्धिक्रियाः काञ्चनधातुयुक्तिवाग्युक्तिमन्त्रिप्रमुखा बुधेऽह्नि ॥

यहाँ पर गर्ग—

बन्धयोगं वधं सर्वं व्यायाम च विशेषतः । नृपसेवा च यात्रा च तथैव क्रयविक्रयौ ॥
चौरांश्च योजयेत् प्राज्ञो बद्धान् पाशांश्च मोचयेत् । एवं मित्र च शिष्य च बन्धुभिः सह सङ्गमम् ॥
आश्रमे च तथा भूमौ केदारे वपने तथा । शिक्षेत रूपकर्माणि दिने चन्द्रसुतस्य च ॥

यह चण्डक वृष्टि प्रयात दण्डक है । चण्डक वृष्टि प्रयात दण्डक का लक्षण—

प्रथमक इह दण्डकश्चण्डवृष्टिप्रपातो भवेन्नद्वयेनाथ रैः सप्तभिः । प्रतिपदमिह रेफवृद्धाः स्युरर्णार्णवव्यालजीमूतलीलाकरोद्दामशङ्खादयः ।

इस छन्द में दो नगण और बत्तीस रगण होते हैं ॥ ६१ ॥

वर्णकदण्डक छन्द के द्वारा बृहस्पति वार में विहित कर्म—

सुरगुरुदिवसे कनकं रजतं तुरगाः करिणो वृषभा भिषगौषधयः
द्विजपितृसुरकार्यपुरःस्थितधर्मनिवारणचामरभूषणभूपतयः ।
विबुधभवनधर्मसमाश्रयमङ्गलशास्त्रमनोज्ञबलप्रदसत्यगिरः
व्रतहवनधनानि च सिद्धिकराणि तथा रुचिराणि च वर्णकदण्डकवत् ॥

बृहस्पति दिन में सोना, चान्दी, घोड़ा, हाथी, बैल, वैद्य, औषधि, ब्राह्मणों का तर्पण,